त्यागपत्र- एक चर्चा

डॉ अनिता मिश्र

मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार जैनेंद्र कुमार का बहुचर्चित उपन्यास है -त्यागपत्र ।यह सन 1937 में प्रकाशित हुआ। उपन्यास की नायिका मृणाल है ।उपन्यासकार ने मृणाल के माध्यम से भारतीय परिवार और समाज में स्त्री की दयनीय तस्वीर को प्रस्तुत किया है।

मृणाल के माता- पिता की मृत्यु हो चुकी है। उसकी परवरिश बड़े भाई ने की। उससे चार- पांच साल छोटा भ तीजा प्रमोद है। बुआ-भतीजा में प्रेमपूर्ण संबंध है। वह बग्घी से स्कूल जाती है । वह अपनी सहेली शीला के भाई से प्रेम करती है । वह स्कूल के बाद शीला के घर जाती है और देरी से घर लौटती है। प्रेम का खुलासा होने पर मृणाल की पिटाई होती है। उसकी पढ़ाई बंद कर दी जाती है । भाभी को मृणाल का प्रेम करना अनुशासनहीनता लगता है ।उसे दंडित किया जाता है और शादी कर दी जाती है। मृणाल परिवार द्वारा उठाए गए किसी भी कदम का विरोध नहीं करती है। जैनेंद्र ने दिखाया है कि परिवार बालिकाओं के प्रेम को स्वीकार नहीं कर पाता है। ऐसी लड़कियों के पैरों में विवाह की बेड़ियां डाल दी जाती है । भाई का परिवार मृणाल के साथ अन्याय करता है । मृणाल अन्याय को सिर झुका कर स्वीकार करती है ।वह विदाई के समय स्वयं को मरा हुआ मान लेती है ।वह प्रमोद से कहती है," प्रमोद तेरी बुआ तो मर गई तू उसे अब कभी याद मत करियो" । जैनेंद्र की यथार्थ दृष्टि भारतीय समाज को बेनकाब करती है। भारतीय परिवार में विवाह के बाद लड़की के लिए पिता-गृह में कोई स्थान नहीं रहता है। मृणाल की इच्छा के विरुद्ध भाई उसे बार-बार पति- गृह भेजता है जहां पति उसकी पिटाई करता है। वह न चाहते हुए भी पति-गृह जाने को विवश होती है ।वह प्रमोद से कहती है,' तुम सब लोगों के लिए मैं पराई हूं ।'वस्तुतः यह भारतीय नारी की यथार्थ तस्वीर है जिसे जैनेंद्र ने दिखाया है ।विवाह के बाद बेटियों को एक झटके में पराया बना दिया जाता है । वे ससुराल में आजीवन कष्ट सहती हैं। इस पीड़ादायक स्थिति से नारियां आज भी मुक्त नहीं हुई हैं। जैनेंद्र कुमार ने दिखलाया है कि भारतीय परिवार में पति- पत्नी का रिश्ता बराबरी का नहीं होता है। पत्नी के विवाह पूर्व प्रेम को पति स्वीकार स्वीकार नहीं कर पाते। मृणाल का पति भी उसे घर से निकाल देता है। पिता और पति के घर से निष्कासित स्त्री के लिए समाज में कोई स्थान नहीं बचता है, जहां वह सम्मान के साथ जी सके। ऐसी नारी का सभी शोषण करते है। मृणाल के सौंदर्य पर मोहित कोयला वाला उसका दैहिक शोषण करता है। वह आर्थिक सहायता करने के बहाने उसके नजदीक जाता है ।उसके गर्भ धारण करने के बाद छोड़ कर चला जाता है। मृणाल कोयले वाले के चले जाने के बाद एक बच्ची को जन्म देती हैं। वह दूसरों के घर में काम करती है। ईसाई मिशनरी वाले उसकी बच्ची को ग्रहण करके उसकी परवरिश करना चाहते हैं ।बदले में चाहते हैं कि वह ईसाई धर्म को स्वीकार कर ले ।मृणाल धर्म-परिवर्तन के लिए तैयार नहीं होती। मिशनरी से उसे कोई सहायता नहीं मिलती। लेखक जैनेंद्र ने ईसाई मिशनरियों के चेहरे को उजागर उजागर किया है।

मृणाल हर हाल में जिंदगी की डोर को पकड़े रहती है। वह जानती है कि उसकी वास्तविकता को समाज ग्रहण नहीं करेगा इसलिए वह अपना परिचय छिपाती है। वह विधवा बनकर डॉक्टर के घर में बच्चों को पढ़ाती है। परिचय प्रकट होते ही उसकी नौकरी चली जाती है। समाज ही नारी के जीवन को दागदार बनाता है पर अपेक्षा करता है कि वह निदाग रहे । मृणाल को परिवार-समाज से जो भी मिला, उसने स्वीकार किया ,कभी भी, कहीं भी विरोध नहीं किया। वह धारा में बहती चली गई ।हम उसके कदमों और विचारों का समर्थन नहीं कर सकते, पर उसे अस्वीकार भी नहीं कर सकते ।आज भी समाज में औरतें , मृणाल जैसा जीवन जीने को मजबूर हैं। आज भी उनके प्रेम करने पर समाज द्वारा बंदिश लगाया जाता है ।ऐसी लड़कियों को समाज वर्तमान में भी

अच्छी नजर से नहीं देखता है। वे परिवार द्वारा चयनित व्यक्ति से विवाह करने को मजबूर होती हैं। मृणाल ,झंझावातो का सामना करते हुए वेश्याओं के बीच जाकर रहने लगती है। प्रमोद उसे घर लाना चाहता है। वह आने को तैयार नहीं होती। वह जीवन को परीक्षा के रूप में देखती है। वह कहती है', जीवन एक परीक्षा है कम से कम मैंने तो उसको यही बना लिया है तुम आओगे तो आ जाना ,लेकिन मुझसे किसी बात की उम्मीद ना करना' ।' मृणाल शहर के उस हिस्से में रहती है जहां अधेड़ अवस्था की वेश्याएं, बेकार मजदूर, पेशेवर भीखमंगे, कानून की आंख और चंगुल से बचकर छिपे -उधड़े काम करने वाले उचक्के लोग रहते हैं, मृणाल जीवन के अंत तक उन्हीं के बीच रहती है। यद्यपि प्रमोद उसका उद्धार करना चाहता है लेकिन मृणाल केवल अपना उद्धार करना नहीं चाहती ।वह जिनके बीच है उन सब के जीवन के बारे में सोचती है ।वह उन सब के उद्धार की बात सोचती है, लेकिन प्रमोद सबके उद्धार की बात नहीं सोच पाता। मृणाल समाज से परित्यक्त लोगों के बीच रहती है । परित्यक्त लोग समाज की ही देन हैं। सम्माननीय और समर्थवान लोग उस नरक कुंड को बदलने की कोशिश नहीं करते। प्रमोद भी परित्यक्त लोगों के नारकीय जीवन को बदलने के बजाए पीछे हट जाता है। लेखक का मानस वेश्याओं के उद्धार की दिशा में साहसिक कदम नहीं उठा पाता।

त्यागपत्र उपन्यास के केंद्र में मृणाल है। उपन्यास की पूरी कथा उसके इर्द गिर्द घूमती है।अन्य पात्र हैं- मृणाल के भाई, भाभी और भतीजा प्रमोद। मृणाल अति नटखट है। स्कूल की हर बात प्रमोद को बताती है। अपनी सहेली के भाई से प्रेम करती है जो मेडिकल पढ़ता है। उसका प्रेम करना परिवार को स्वीकर नहीं। उस पिता जाता है और उसका विवाह कर दिया जाता है ।विवाह के बाद ससुराल में पति पीटता है। मृणाल प्रेमी को भूल नहीं पाती । वह मर जाना चाहती है। वह खुले विचारों वाली है इसलिए पति से प्रेमी के पत्र की चर्चा करती है । वह पति की नजरों में गिर जाती है। यह घटना उसके जीवन की दिशा को बदल देती है। वह घर से बाहर कर दी जाती है। मृणाल की भाभी घरेलू महिला है । वह मृणाल को परंपरित और संस्कारी महिला के साँचे में ढालना चाहती है। ससुराल से निकाले जाने के बाद वह भाभी द्वारा मरा हुआ मान ली जाती है। मृणाल के भाई को बहन का बार-बार मायके आना पसंद नहीं। प्रमोद पिता के कदमों का विरोध करता है। वह सब समय मृणाल का साथ देता है। मां द्वारा बुआ को मृत् घोषित करने पर भी वह मृणाल को खोज नि कालता है,पर जज़ बनने के बाद वह बुआ और उसके जैसी औरतों को समाज के दलदल से बाहर निकालने के बजाय पीछे हट जाता है। वह एक कमजोर व्यक्ति है।(डॉ अनिता मिश्र, निज प्रकाशित लेख का अंश)

।